13

ब्रह्माण्ड का अदृश्य पदार्थ

जैसे-जैसे तारों और आकाशगंगाओं के बारे में समझ का दायरा बढ़ता गया, उसी के साथ यह विचार भी सशक्त होने लगा कि आकाशगंगा में कोई अदृश्य पदार्थ मौजूद है। इस दिखाई न देने वाले पदार्थ को डार्क मैटर नाम दिया गया। इस पदार्थ के बारे में 1960-70 के दशक में काफी शोधकार्य शुरू हुए। इन शोधकर्ताओं की जमात में एक महिला - वीरा रुबिन भी शुमार हैं।

रुबिन के अनुभव बताते हैं कि अमरीका जैसे विकसित देश में भी महिला वैज्ञानिकों को लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। कठिन हालातों में भी रुबिन ने अदृश्य पदार्थ पर शोधकार्य कर ब्रह्माण्ड को समझने का नया आयाम दिया। रुबिन के शोधकार्य और व्यक्तित्व के बारे में पढ़िए इस लेख में।

पाठशाला, शिक्षक और शिक्षा की चाहत

19वीं सदी भारत के लिहाज़ से कई मायनों में महत्वपूर्ण थी। एक ओर ब्रिटिश हुकूमत का शिकंजा कसता जा रहा था, दूसरी ओर औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों से घरू उद्योग-धन्धे प्रभावित हो रहे थे। इन सबके बीच भारत में एक नए शैक्षणिक ढाँचे का आगमन हो रहा था।

नए ढाँचे में पाठ्यपुस्तकें, पढ़ाई का माध्यम और स्कूल से प्रदेश मुख्यालय तक एक तंत्र दिखाई दे रहा था। लेकिन क्या सारे भारत में यही ढाँचा था या कई अन्य पारम्परिक शिक्षा व्यवस्थाएँ भी अस्तित्व में थीं? कैसे थे पारम्परिक स्कूल, नवाबों-ज़मीदारों के बच्चों की पढ़ाई के लिए क्या जतन किए जाते थे, क्या सवर्ण उस समय दलितों के साथ बैठकर शिक्षा ग्रहण करने के इच्छुक थे, लड़कियों की शिक्षा प्राथमिकता का मसला था या नहीं? उस दौर की पठन सामग्री को पढ़कर ऐसे कई सवालों की तह तक पहुँचा जा सकता है।

45

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-30 (मूल अंक-87), जुलाई-अगस्त 2013

इस अंक में

5 | **ऑक्सीजन की खोज**
सुशील जोशी

13 | **ब्रह्माण्ड का अदृश्य पदार्थ**
डेनिस ओवरबाय

27 | **ऋषि वैली में जल-प्रबन्धन का अध्ययन**
ऋषि वैली के छात्र एवं शिक्षक

45 | **पाठशाला, शिक्षक और शिक्षा की चाहत**
माधव केलकर

63 | **आँख की ऊपरी पलक दबाने से दो बिम्ब...**
सवालीराम

66 | **अजूबा**
रिनचिन

77 | **फिशिंग स्पाइडर**
पारुल सोनी